Free oral reproduction
स्वतन्त्र मौखिक कार्य

यह कार्य इन विशेष उद्देश्यों से न होकर सामान्य रूप से बोलने की कला अथवा कलाओं की शिक्षा देने के उद्देश्य से होगा। वास्तविक मौखिक रचना यही है और इसका अन्तिम लक्ष्य बालकों को बालकों को सार्वजनिक वादविवाद के लिए प्रस्तुत करना है।

पहली आवश्यक बात इस सम्बन्ध में यह है बालकों का उच्चारण शुद्ध और स्पष्ट हो। श, ष, स, ह, र क्ष, ह्रस्व और दीर्घ इ और उ की मात्राओं के उच्चारण के भेद को बालक स्पष्ट कर सकें और केवल शब्दों में ही नहीं वरण वाक्यों के बोलने में भी शुद्ध उच्चारण करे।

स्वाभाविकता, बोलने का दूसरा आवश्यक गुण है। कक्षा में बोलने का ढंग भी स्वाभाविक होना चाहिए। साधारण बातचीत में ऐसा न लगना चाहिए कि बालक पढ़ रहा है अथवा व्याख्यान दे रहा है।

स्वर न बहुत मन्द हो और न बहुत ऊँचा हो। बालकों में स्वाभाविकता होनी चाहिए।

जहाँ ~~आव~~ आवश्यक हो वहाँ वाणी में चेतना - शक्ति और जीवन रहे। बातचीत में आवश्यक गति होनी चाहिए। शुद्ध और सहज बोलना चाहिए। रुक - रुक कर बोलना प्रायः अशुद्धता लिए

Scanned by TapScanner

रहता है।

मौखिक भाव प्रकाशन शिक्षण के उद्देश्य:

(क) बालकों का उच्चारण शुद्ध एवं परिमार्जित हो।

(ख) बालक अपने मनोभावों को सरलता तथा स्पष्टता से दूसरों पर प्रकट कर सके।

(ग) बालकों का संकोच, उनकी झिझक तथा आत्महीनता की भावना दूर हो जाये।

इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए छात्रों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन होने चाहिए।

मौखिक भाव-प्रकाशन के विशिष्ट योग्यताएं:

1. छात्र सुश्राव्य वाणी में आत्म-प्रकाशन कर सकेगा
2. वह बोलने में विराम का ध्यान रख सकेगा।
3. उसके बोलने में प्रवाह होगा।
4. वह व्याकरण-सम्मत भाषा का प्रयोग कर सकेगा।
5. वह वाक्यों में शब्दों, वाक्यांशों तथा उपवाक्य का क्रम अर्थानुकूल रख सकेगा।
6. वह अभीष्ट सामग्री प्रस्तुत करेगा।
7. वह क्रमबद्धता बनाये रखेगा।
8. वह विषय की योग्यता को अक्षुण्ण बनाये रखेगा।
9. वह उचित हावभाव के साथ बोल सकेगा।
10. वह आवश्यक पुनरावृत्ति ही करेगा।

Scanned by TapScanner